ISSN: 2583-0511 (Online)

पशुओं में बाहय परजीवी एवं रोकथाम

रश्मि कुमारी[1], डॉ.अंजय[2] एवं डॉ.दिनेश कुमार[3]

[1]कृषि विभाग, बिहार सरकार, सुपौल, बिहार-852131
[2]सहायक प्रोफेसर, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बसु, पटना, बिहार
[3]सहायक प्रोफेसर, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, जेएनकेवीवी, जबलपुर, एमपी-472001

पशुओं में मक्खी, किलनियाँ, तथा मच्छर जोकि बाहय परजीवी हैं अनेक प्रकार के रक्त परजीवियों को शरीर के अंदर खून चूसने के द्वारा फैला देते हैं । कोई भी घरेलू पशु इस समस्या से बचा नहीं है। भारत में किलनी एवं किलनी द्वारा फैलने वाले रोगों से एक अनुमान के अनुसार लगभग दो हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष को नुकसान होता है। ये बाहय परजीवि खुजली करने के साथ-साथ त्वचा को खराब कर देते हैं तथा वहां पर घाव बन जाते हैं। पशुओं के बाल गिर जाते हैं, खाल फटने लगती है तथा अंत में त्वचा से खून बहने लगता है। बाहय परजीवी अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न प्रकार के परजीवी ¼बेबेसिया, थेलेरिया, ट्रिपैनोसोमा, मलेरिया½ तथा कृमि रोग, बीमार पशुओं से स्वस्थ पशुओं में फैलाते हैं। अतः इन कीटों के बारे में पशुपालकों को जानकारी होनी चाहिए ताकि बाहय परजीवियों से पशुओं को बचाकर बीमारियों के प्रकोप से बचाया जा सके।

1. किलनियाँ (Tick)

किलनी सभी प्रकार के पालतू पशुओं में पायी जाती हैं। परंतु इनकी संख्या मार्च अप्रैल से लेकर अक्टूबर माह तक ज्यादा रहती है तथा खतरनाक बीमारियों को फैलाने में सहायक होती है। हमारे देश में पशुधन से संबंधित किलनियाँ जो की महत्वपूर्ण किसमें पाई जाती हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं बुफिलस, हायलोमा एनाटोलिकम, रिफिसिफिलस सिनगुइनस तथा हीमोफिलस है। पालतू व दुधारू पशुओं में बुफिलस किलनि द्वारा बेबेसिया रोग फैलता है। इस रोग का परजीवी बेबेसिया गाय, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ता तथा घोड़ा में किलनि द्वारा रक्त चूसने से होता है। इस बीमारी को पेशाब का बुखार या रेड वाटर बुखार कहते हैं क्योंकि बीमार पशुओं का पेशाब का रंग लाल हो जाता है तथा जानवरों को तेज बुखार आता है।

हायलोमा प्रजाति की किलनी द्वारा थेलेरिया नामक बीमारी दुधारू पशुओं में फैलती है। संक्रमित पशुओं में बुखार, आंख और नाक से पानी गिरना, निकटतम ग्रंथि में सूजन और दूध लेने की क्षमता कम हो जाती है। नवजात पशुओं की इस भयानक बीमारी की वजह से मृत्यु भी हो जाती है।

2. मक्खियाँ (House Fly)

वयस्क मक्खियाँ रात और सुबह के समय पूर्ति में रहती है तथा सालभर पाई जाती हैं। यह बीमार पशुओं से जीवाणु लेकर दूसरे स्वस्थ पशुओं को काटने के दौरान छोड़ देती हैं। जिन स्थानों पर वर्षा और बाढ़ अधिक होती है या फिर जलवायु मक्खियों के प्रजनन के लिए उपयुक्त होता है, अधिक मात्रा में पाई जाती है। मक्खियाँ पालतू पशुओं में सर्रा नामक बीमारी फैलाती है। इसमे पशु धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है तथा दूध देने की क्षमता कम हो जाती है।

3. मायसिस (Myasis)

जानवरों की त्वचा के अंदर लार्वा विकसित होने से मायसिस बीमारी हो जाती है। यह मुख्यतः भेड़ों में होता है। इन मखियों का रंग पीला, हरा, नीला, व काला होता है। मादा मखियां सरते हुए मांस व मल की बदबू या भेड़ों के शरीर के पिछले भाग व जांध की उन पर चिपक जाती है। वहा पर व अंडा देने लगती है तथा इन अंडाओं से लार्वा निकलते हैं, जो मैगट बन जाते हैं, इस कारण इस में से बदबू आती है तथा उस हिस्से की ऊन या बाल गिर जाते हैं।

4. खुजली या खाज (Scabies)

खाज या खुजली एक चर्म रोग है, जो पशुओं में मायटस (कुटकी) की विभिन्न जातियों द्वारा होता है। ये मुख्यतः सारकॉप्टिक, सोरोप्टिक, कोरियोप्टिक, व डेमोकॉप्टिक प्रकार की होती है। यह बीमारी ज्यादातर गोवांशी, भेड़, बकरी, सूअर, कुत्ता, ऊंट आदि में होती है। त्वचा के ऊपर अंडे देने से वहां पर लारवा बनते हैं जो वहां पर गांव बनाने लग जाती हैं तथा खुजली होती है इस्केसाथ बाल झड़ने लगते हैं रोगी कुत्तों की त्वचा का रंग लाल हो जाता है तथा सूजन व खुजली होती है इसे लाल खास भी कहते हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online)

रोकथाम

1. पशुग्रह में साइपरमेथ्रिन का घोल बनाकर (20ml/L) पानी में मिक्स करके छिड़काव करें।
2. गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि जानवरों पर इसका एक ml प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रेपंप द्वारा छिड़काव करें।
3. मेलाथियान 0.25 प्रतिशत पानी में मिलाकर पशु ग्रह व पशुओं पर छिड़काव करें।
4. पशुओं के आसपास धुआ करने से कीटों को भगाएं।
5. रोगग्रस्त भेड़ में घाव के आसपास की ऊन पूर्ण काट कर घाव को 0.05 प्रतिशत साइपरमेथ्रिन के घोल से साफ करके कीटनाशक क्रीम का प्रयोग करें।
6. मृत पशु के शव को तुरंत गड्ढा करके दफना दे।
7. कुत्तों को साबुन से नहा लाकर 0.05 प्रतिशत बीएचसी घोल बनाकर लगाएं।
8. बुझे चूने का पानी व गंधक मिलाकर 10 दिन तक प्रयोग करें।
9. आइवरमेक्टिन 1 ml प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार इंजेक्शन लगाने पर भी लाभ मिलता है।

10. अच्छी प्रकार के कीटनाशक बाजार से भली-भांति पता कर खरीदे तथा उनकी उचित मात्रा में प्रयोग करें।
11. कीटनाशकों को पशु पर प्रयोग करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखा जाए कि पशु की आंखों व मुंह को नुकसान ना पहुंचाएं।
12. बाह्य परजीवीयो के निवारण के लिए समुदायकी योजना बनाएं या फिर निकटतम पशु चिकित्सक से संपर्क करें।